श्री सभापति : बैठ जाइए ...**(व्यवधान)**... Just a minute. Let us hear the Leader of the House. एक मिनट ठहर जाइए ...**(व्यवधान)**...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (मध्य प्रदेश): मेरा निवेदन है कि दूसरी पार्टियों को भी सुन लिया जाए, उसके बाद जवाब दे दें ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवाल: सभी ने नोटिस दिया है ...**(व्यवधान)**... सब की क्यों नहीं सुनेंगे?...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : एक मिनट सुन लीजिए ...**(व्यवधान)**... We observe the ritual of listening to the Leader of the House.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI ARUN JAITLEY): Sir, the hon. Leader of the Opposition wishes to raise this issue and so do the other Members; we have absolutely no difficulty considering the reasons while we are faced with the situation of this kind, and you may start the discussion right now.

श्री नरेश अग्रवाल: सभापति जी, स्टार्ट कैसे कर सकते हैं? सबसे पहले तो रेल मंत्री जी को बयान देना पड़ेगा कि कल बजट आ रहा है और उन्होंने बजट से पहले दाम कैसे बढ़ा दिए? ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: देखिए, आप अपनी बात उठाइए, लेकिन उसका यह वक्त नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवाल: पेट्रोलियम मंत्री को बयान देना होगा ...**(व्यवधान)**...जब 10 तारीख को बजट आ रहा हो तो उससे पहले पेट्रोल के दाम कैसे बढ़ा दिए? ...**(व्यवधान)**... ये सभी चीजें अहम हैं ...**(व्यवधान)**... खाली ऐसे कहने से क्या होगा? ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: आपकी बात मान ली गई है ...**(व्यवधान)**... सब सहमत हैं ...**(व्यवधान)**... तो बैठ जाइए ...**(व्यवधान)**... आप बात तो सुनिए ...**(व्यवधान)**... चर्चा उसी पर हो रही है ...**(व्यवधान)**... प्लीज, आप बैठ जाइए ...**(व्यवधान)**... If you wish to start the discussion on price rise, please do it.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, yes, we can start right now.

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश): संसद सत्र से पहले कीमतों का ऐलान करना संसद का अपमान है ...**(व्यवधान)**...

†**چودھری منوّر سلیم** : سنسد ستر سے پہلے قیمتوں کا اعلان کرنا سنسد کا اپمان ہے ..(مداخلت)..

MR. CHAIRMAN: Would you wish to initiate the discussion? Please continue

---

DISCUSSION ON PRICE RISE AND INFLATION FACED BY THE COUNTRY

श्री गुलाम नबी आज़ाद : माननीय चेयरमैन साहब, सबसे पहले मैं अपनी पार्टी की तरफ से और हमारे विपक्ष के जिन साथियों ने इस मुद्दे को उठाया है, उनकी तरफ से नई सरकार को बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने देशवासियों को महँगाई की शक्ल में इतनी बड़ी गिफ्ट दी है। पूरो देश इस वक्त का इंतजार कर रहा था। इलेक्शन में इस दफा भारतीय जनता पार्टी ने तकरीबी 6 महीने पूरे देश के अंदर प्रचार किया और जो तमाम प्रचार था, वह केन्द्रित महँगाई और इन्फ्लेशन पर। मुझे यकीन है कि

†Transliteration in Urdu Script.

अगर 80-90 प्रतिशत वोट इस भारतीय जनता पार्टी को मिला है, इस सरकार को मिला है, तो वह महँगाई के नाम पर मिला है। अलग-अलग स्लोगंस दिए गए। जो आज माननीय प्रधान मंत्री हैं, उस वक्त वे कैंपेन कमेटी के चेयरमैन थे। उनसे लेकर नीचे तक हरेक लीडर की ज़ुबान से एक ही बात निकलती थी कि कांग्रेस पार्टी और यूपीए को तो गरीबी के बारे में कोई जानकारी नहीं है, वह क्या जाने महँगाई से गरीब आदमी पर क्या असर पड़ता है। आज हम पूछना चाहते हैं कि अगर कांग्रेस पार्टी को गरीबी पता नहीं थी और भारतीय जनता पार्टी के माननीय लीडर्स को और पार्टी को गरीबी के बारे में ज्यादा जानकारी थी, तो क्यों पहले से ही उन्होंने वे प्रावधान किए कि पहले एक सवा-महीने में ही देश के गरीब की कमर महँगाई से टूट गई?

माननीय चेयरमैन साहब, हमने चहुँमुखी विकास देखा था। अलग-अलग राज्यों में भी हमारे जो साथी और सहयोगी हैं, उन्होंने, हमारी पार्टी ने और राष्ट्रीय स्तर पर भी यूपीए ने यह देखा कि पिछले 10 सालों से जब पूरी दुनिया इकोनॉमिक क्राइसिस की लपेट में थी, उस वक्त भी भारत ने हमारे विश्व के माने हुए अर्थशास्त्री, डा. मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व में चहुँमुखी विकास का प्रयास किया और चहुँमुखी विकास हुआ। आज कहा जाता है, हम पिछले दो-तीन दिनों से टेलीविजन पर सुन रहे हैं, बहुत सारे इकोनॉमिस्ट्स और इंडस्ट्रियलिस्ट्स को सरकार की तरफ से लाया जाता है कि वे कहें कि पैसा जोड़ना है और इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाना है। क्या हम लोगों ने 10 सालों में इंफ्रास्ट्रक्चर पर पैसा खर्च नहीं किया? कितनी सड़कें बनीं, यह दिल्ली के एयरपोर्ट से लेकर पूरे हिन्दुस्तान में आप जिस एयरपोर्ट पर जाएँ, जो भी 5-7 साल पहले आया होगा, वह पहचानता नहीं है। हिंदुस्तान में कितनी सड़कें बनीं, कितने पुल बने, आज नई ट्रेनें चल रही हैं, हर श्हार के अंदर कितने अस्पताल बने, कितने स्कूल्स बने, कितनी सेंट्रल यूनिवर्सिटीज़ बनीं, कितने कॉलेज़ेज बने, लेकिन इस इकोनॉमिक क्राइसिस में भी हमने इंफ्रास्ट्रक्चर को नहीं रोका और उसके साथ-साथ चहुँमुखी विकास किया। लेकिन आज भारतीय जनता पार्टी के सवा महीने में ही हम चहुँमुखी महँगाई देख रहे हैं। इतनी चहुँमुखी महंगाई कभी भी नहीं हुई है। यूपीए सरकार के समय में अगर कहीं एक चीज़ में महंगाई होती थी, तो छः महीने के बाद दूसरी चीज़ में महंगाई होती थी। एक तरफ चहुँमुखी विकास और दूसरी तरफ चहुँमुखी महंगाई, यही अंतर है यूपीए और आज की भारतीय जनता पार्टी की सरकार में।

हमारे वक्त में माननीय प्रधान मंत्री जी ने, कैबिनेट ने और विशेष तौर पर यूपीए चेयरपर्सन, श्रीमती सोनिया गांधी ने महंगाई को रोकने के लिए जितनी भी कार्रवाई करनी थी, वह सब हमने की। हमने जॉब्ज दीं, मनरेगा के अंदर हमारी जो दूसरी स्कीम्स थीं, उनमें हमने जॉब्ज क्रिएट कीं, उसके बावजूद भी जब सरकार इस नतीजे पर पहुंची कि गरीबों के लिए इतना पैसा काफी नहीं है, तो श्रीमती सोनियाँ गाँधी, जो यूपीए की चेयरपर्सन हैं, उनके और प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी को फूड सिक्योरिटी बिल लाना पड़ा, ताकि गरीब आदमी को एक रुपये, दो रुपये और तीन रुपये किलो में अनाज मिल सके। यूपीए गवर्नमेंट ने इस प्रकार के काम किए, लेकिन दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आते ही पहले रेल किराये बढ़ाये और फिर फ्रेट के दाम भी बढ़ा दिए। अगर आप फ्रेट के दाम बढ़ाएंगे, तो जाहिर है कि रेल से जाने वाली चीज़ों की कीमत भी बढ़ेंगी। आज बहुत सी चीजें हिंदुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने में रेल के ज़रिए जाती है, इस तरह महंगाई तो आपने आप ही बढ़ गई।

मुझे याद है, अगर मैं गलत हूं, तो माननीय फाइनेंस मिनिस्टर मुझे करेक्ट करेंगे, 7 मार्च, 2012 को, रेलवे बजट से पहले, हमारी सरकार ने जब रेलवे के किराये में वृद्धि की थी, तो उस समय मुख्य मंत्री और आज के माननीय प्रधान मंत्री जी ने तत्कालीन प्रधान मंत्री जी को एक ख़त लिखा था। मैं

जानना चाहता हूं कि यह बात सच है या नहीं? उस ख़त में लिखा था कि बजट से पहले यूपीए सरकार ने रेलवे के किराये क्यों बढ़ायें हैं? केन्द्रीय सरकार को तुरन्त किराये में हुई इस बढ़ोतरी को वापस लेना चाहिए। क्या दो ही साल में आपकी वह पॉलिसी बदल गई, क्योंकि आप इधर से उधर पहुंच गए? दो साल पहले यह बात आपने यूपीए सरकार को बताई थी, लेकिन आज बजट से पहले रेलवे के फ्रेट और किरायों में 14% और 6% की वृद्धि हुई है।

माननीय चेयरमैन साहब, डीज़ल पेट्रोल और कुकिंग गैस के दाम बढ़े हैं। जब डीज़ल के दाम बढ़ जाते हैं, तो जाहिर है कि जो सामान ट्रकों के माध्यम से एक कोने से दूसरे कोने तक जाता है, उसके दामों में भी वृद्धि होगी। कश्मीर से सेब हिन्दुस्तान के हर कोने में जाता है, साथ ही दूसरी अन्य कई प्रकार की चीज़ें हैं, जो कश्मीर से पंजाब, नॉर्थ से साउथ, साउथ से ईस्ट, ईस्ट से वेस्ट की तरफ जाती हैं। जब हम डीज़ल के दाम बढ़ा देते हैं, तो जाहिर है कि हर चीज़ के दाम बढ़ जाते हैं।

अनाज के दाम बढ़ गए हैं। सिर्फ सवा महीने में फूड इन्फ्लेशन 8% से 9.5% तक बढ़ गया। यह बहुत बड़ा चिन्ता का विषय है।

माननीय चेयरमैन साहब, मेरे पास एक बड़ी लम्बी सूची है, शायद मेरे साथियों के पास इससे भी लम्बी सूची होगी। चावल के दाम बढ़ गये, ब्रेड के दाम बढ़ गये, मस्टर्ड के दाम बढ़ गये, ओनियन के दाम बढ़ गये, टमाटर के दाम बढ़ गये, अंडों के दाम बढ़ गये, साथ ही उड़द, अरहर और मसूर दालों के दाम बढ़ गये। दूध की कीमतें बढ़ गई हैं, वॉटरमैलन की कीमत बढ़ गई है, कोकोनट की कीमत बढ़ गई हैं, प्लम की कीम बढ़ गई है, सब की कीमत बढ़ गई है, पपाया की कीम बढ़ गई है, अंगर की कीम बढ़ गई है, मिंट की कीमत बढ़ गई है, जिंजर की कीमत बढ़ गई है, मेथी की कीमत बढ़ गई है। अभी उस दिन मैं टेलिविज़न पर देख रहा था, मुम्बई में मेथी की इतनी छोटी सी गड्डी की कीमत दस गुना तक बढ़ गई है। आंवला की कीमत बढ़ गई है, मशरूम की कीमत बढ़ गई है, कैप्सिकम, ब्रिजल, कॉलिफ्लावर, पम्पकिन, गुड़ इन सबकी कीमतें बढ़ गई हैं। ऐसी कितनी ही खाने की चीज़ें हैं, जिनकी कीमतें बढ़ी हैं।

हिन्दुस्तान के हर भाग में अलग-अलग खान-पान की परम्परा है, लेकिन कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और सिक्किम से लेकर गुजरात तक, हर जगह खाने-पीने की चीज़ों की कीमतें बढ़ गई हैं। माननीय चेयरमैन साहब, मैं जानना चाहता हूँ कि इस देश का गरीब कैसे जिन्दा रहेगा? जिस गरीब को उठाने के लिए, जिसके उत्थान के लिए यूपीए गवर्नमेंट ने 10 साल लगाए, इतने काम चालू कर दिए कि पहले जो एक स्टेट से दूसरे स्टेट में पलायन होता था, लेकिन जब से पी.एम.जी.एस.वाई. आया, जब से मनरेगा आया, आज एक स्टेट में एक डिस्ट्रिक्ट से दूसरे डिस्ट्रिक्ट में मजदूर लोग नहीं जाते हैं, क्योंकि उनको अपने डिस्ट्रिक्ट के अंदर, अपनी तहसील के अंदर, अपने ब्लॉक के अंदर और गाँव के अंदर काम उपलब्ध होता है और उसके साथ ही फूड सिक्योरिटी बिल भी लाया गया, लेकिन आज यह हाल है कि सवा महीने के अंदर गरीब आदमी क्या खाएगा, क्या खरीदेगा और कैसे जिन्दा रहेगा? इसलिए, मेरी पार्टी की तरफ से माँग है कि जितनी भी महँगाई डीजल, पेट्रोल, कुकिंग गैस जैसी चीज़ों में आई हैं, इनकी बढ़ी कीमतें वापस ली जाएँ, जो रेल के माल भाड़े और उसके किराये में वृद्धि है, उसको वापस लिया जाए और दूसरी जितनी भी खाने-पीने की चीज़ें हैं, उनकी कीमतें तुरंत कम की जाएं, ताकि इस देश के जो गरीब हैं, मजदूर हैं, किसान हैं, जिनके पास इम्प्लॉयमेंट नहीं है, और जिनकी आमदनी का कोई जरिया नहीं है, वे आराम की जिन्दगी बसर कर सकें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you very much.

Before I call the next speaker, I want to mention a couple of things. There are 25 party leaders who have given their names to take part in this discussion. So, my request is: Let every speaker not take more than five minutes. That is one.

The second point is, at 12 o' clock, the hon. Prime Minister would introduce a Member of the Council of Ministers. So, we will take just a short break of a few minutes for that introduction.

The next speaker is...

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा: चेयरमैन सर, मेरी एक रिक्वेस्ट है। अगर आप ऐसे मसले पर पाँच मिनट का समय सीमित कर देंगे, तब तो बहुत कम समय बोलने को मिलेगा। **...(व्यवधान)...**

श्री सभापति: आप तय कर लीजिए कि कितना समय चाहिए। **...(व्यवधान)...**

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा: सर, उसको फिक्स मत कीजिए। अगर पाँच मिनट से छः मिनट होता है, सात मिनट हो जाता है **...(व्यवधान)...**

श्री सभापति: सतीश जी, वह तो होता ही है। **...(व्यवधान)...**

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा: तो कम से कम बोलने का मौका जरूर दीजिएगा।

श्री सभापति: ठीक है। सतीश जी, अभी आपका नंबर है, बहुजन समाज पार्टी का नम्बर है।

सुश्री मायावती (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति जी, इस बार जब देश में 16वीं लोक सभा के लिए आम चुनाव हुआ, तो चुनाव के दौरान भारतीय जनता पार्टी और इनके जो सहयोगी दल हैं, इन्होंने देश की जनता से यह कहा था कि जब भारतीय जनता पार्टी पावर में आ जाएगी, सत्ता में आ जाएगी तो देश के अंदर गरीबी, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा तथा महँगाई बिल्कुल खत्म हो जाएगी, देखने के लिए भी नहीं मिलेगी। इतना ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी के लोगों का एक नारा लगाया था कि 'भारतीय जनता पार्टी पावर में आएगी और महँगाई चली जाएगी, गायब हो जाएगी।' तो देश की जनता को चुनाव के दौरान इस किस्म का आश्वसन दिया गया था, लेकिन जब भारतीय जनता पार्टी और इनके सहयोगी दल, यानी एन.डी.ए. जब पावर में आ गये तो सत्ता में आते ही सबसे पहले वर्तमान केन्द्र की सरकार ने इस देश की जो गरीब जनता है और खास तौर से जो मध्यम वर्ग के लोग हैं, जो गरीब और मध्यम वर्ग के लोग हैं, उनको इन्होंने बड़े पैमाने पर उन मुद्दों को लेकर काफी परेशान किया है। सत्ता में आते ही सबसे पहले केन्द्र की सरकार ने एक नई परंपरा शुरू कर दी, जैसे रेल बजट संसद में आने से पहले ही रेल मंत्री ने पिछली सरकार का हवाला देकर यात्री किराया और माल भाड़ा बढ़ा दिया। यात्री किराया 14.2 प्रतिशत और माल भाड़ा 6.5 प्रतिशत बढा दिया गया। इस तरह से इसको काफी बढ़ा दिया गया। पूरे देश के लोगों ने इस बढ़ोत्तरी के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई और यह कहा कि यदि माल भाड़ा और यात्री किराया बढ़ेगा, तो इससे महंगाई के ऊपर भी असर पड़ेगा। इससे महंगाई और बढ़ेगी और जो गरीब लोग हैं जो ज्यादातर रेल से सफर करते हैं, उनको इससे काफी परेशानी होगी। पूरे देश की जनता और विपक्ष की जितनी भी पार्टियां थीं और मैं समझती हूँ कि सत्ता पक्ष में भी एक-दो पार्टियों ने यह आवाज उठाई थी कि यात्री किराया और माल भाड़ा में जो बढ़ोतरी की गई है, इसको वापस लिया जाए, लेकिन सरकार ने इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। इसके

विरुद्ध पूरे देश के लोगों के एजिटेशन किया। उसके बाद देश की जनता कयह सोच रही थी कि हम इतना एजिटेशन कर रहे हैं, तो शायद यह आगे किसी भी वस्तु की कीमत नहीं बढ़ाएगी, लेकिन उसके कुछ समय बाद ही पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ा दिए गए।

माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से पूरे सदन को, खास तौर से सरकार को यह बताना चाहती हूँ कि जब पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ेगा, तो महंगाई और बढ़ेगी, रोजमर्रा की जो वस्तुएं हैं, उनकी कीमतें बढ़ेंगी और इसका सीधा असर गरीब आवाम के ऊपर पड़ेगा तथा मध्यम वर्ग के लोगों के ऊपर पड़ेगा। जब पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ाई गईं, तो इसको लेकर भी पूरे देश की जनता सड़कों पर उतरी और सरकार से यह अनुरोध किया गया, देश की जनता ने यह आग्रह किया कि ये जो बढ़ी हुई कीमतें हैं, ये वापस ली जाएं, क्योंकि इसका सीधा असर महंगाई पर पड़ेगा और रोजमर्रा की इस्तेमाल में आने वाली वस्तुएं हैं, चाहे वे सब्जिया हों, दालें हों, चनी हो या अन्य जितनी भी वस्तुएं हैं, उन सबकी कीमतें बढ़ जाएंगी, इसलिए इनको वापस लिया जाए। उसके बाद फिर रसोई गैस की भी कीमत बढ़ी, लेकिन केन्द्र की सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और कीमतें कम करने के बजाए या वापस लेने के बजाए केन्द्र सरकार के जो संबंधित मंत्री थे, उन्होंने इसके लिए कई बैठकें बुलाईं और सरकार की ओर ये काफी बयानबाजी भी हुई। अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए सरकार ने कहा कि यह जो जमाखोरी हो रही है, इसकी वजह से कीमतें बढ़ रहीं हैं और जमाखोरी के लिए बहाना यह बनाया गया कि चूंकि इस बार मानसून अच्छा नहीं होगा, इसलिए लोगों ने जमाखोरी की है और इसकी वजह से कीमतें बढ़ रही हैं। इतना ही नहीं, फिर केन्द्र की सरकार ने राज्यों के संबंधित मंत्रियों की मीटिंग भी बुलाई। इस पर भी बयानबाजी काफी हुई है। मीटिंगें काफी हुई हैं और महंगाई का मुख्य कारण जमाखोरी को बताया गया है। मैं समझती हूं कि केवल कारण बताने से काम नहीं चलेगा, बल्कि कारण का हल ढूंढना पड़ेगा। सरकार की ओर से इसके लिए हल भी ढूंढा गया है, लेकिन केवल हल ढूंढने से भी काम नहीं चलेगा, बल्कि इस हल को लागू करना होगा। हम सरकार से यह चाहेंगे कि ठीक है कि आपने इसके लिए रास्ते निकाले, लेकिन जब तक आप लोग उसको लागू नहीं करवाएंगे, तब तक जमाखोरी के ऊपर से रोक नहीं लगेगी। इतना ही नहीं, माननीय सभापति जी, इन्होंने कहा कि जो जमाखोरी हो रही है, इसके लिए सरकार सख्त नियम बनाएगी, उसके ऊपर सख्ती से करेगी और उससे महंगाई कम होगी, लेकिन आम जनता का यह कहना है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार के रहते हुए, एनडीए की सरकार के रहते हुए लगता नहीं है कि जमाखोरी के ऊपर कंट्रोल होगा या जमाखोरी रुक जाएगी। भारतीय जनता पार्टी के बारे में आम लोगों का यह कहना है कि भारतीय जनता पार्टी एक बिजनेस क्लास पार्टी है। हर पार्टी का अपना एक बेस वोट होता है, हमारी पार्टी का जो बेस वोट है, वह दलित है। इसी प्रकार, भारतीय जनता पार्टी का जो बेस वोट है, वह बिजनेस क्लास है, व्यापारी वर्ग है। फिर यह जमाखोरी कौन कर रहा है? यह तो व्यापारी वर्ग ही कर रहा है। भारतीय जनता पार्टी को सत्ता में बिठाने के लिए व्यापारियों ने, बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने अपनी तिजोरियाँ खोल दीं, बड़े पैमाने पर पैसा पानी की तरह बहाया गया। जब उन्होंने तिजोरियाँ खोली हैं और भारतीय जनता पार्टी को पॉवर में बिठाया है, तो बिजनेस क्लास, जो कि जमाखोरी कर रही है, उनके ऊपर ये आसानी से नियंत्रण कैसे कर सकते हैं? मुझे नहीं लगता ये नियंत्रण कर पाएँगे। इसलिए मैं समझती हूँ कि यह जो व्यापारी वर्ग है, इस पर नियंत्रण होना चाहिए। जब कि जमाखोरी के लिए ये किसान का बहाना बनाते हैं और कहते हैं कि किसान जमाखोरी करता है। किसान तो वैसे ही गरीब है, वह जमाखोरी कैसे करेगा? यदि वह मार्किट में अपने सामान को लेकर नहीं आएगा, तो उसके परिवार का खर्चा नहीं चलेगा। इसलिए पूरे देश के अंदर जमाखोरी कौन कर रहा है? यह वे

लोग कर रहे हैं जो बिजनेस क्लास के हैं। बीजेपी को बिजनेस क्लास की पार्टी माना जाता है। इनके इलेक्शन के ऊपर बिजनेस क्लास ने जो पैसा लगाया है, अब ये उसको सूद सहित, ब्याज सहित अदा कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि पूरे देश के अंदर यह महँगाई कम होगी।

इसलिए माननीय सभापति जी, आपके माध्यम से खास तौर से सरकार से मेरा यही कहना है कि अगर आपको लगता है कि मेरी बात में सच्चाई नहीं है, तो जो बिजनेस क्लास के लोग हैं, उनके यहाँ आप छापें मारें, लेकिन आपकी हिम्मत नहीं होगी। आप कानून बना दें, नियम बना दें, लेकिन आप लोग बिजनेस क्लास को परेशान नहीं करेंगे। उन्होंने आपके चुनाव पर जो पैसा लगाया है, जब तक उसकी वसूली उनको ब्याज सहित नहीं मिल जाती है, तब तक मुझे नहीं लगता कि उनके ऊपर सख्ती करेंगे। इसलिए सरकार से मेरा यही कहना है कि आपने देश की जनता को चुनाव के दौरान यह कहा था कि बीजेपी पॉवर में आएगी तो अच्छे दिन आएँगे, लेकिन अब इस पार्टी के पॉवर में आते ही अच्छे दिन नहीं, महँगे दिन आ गए। आज हर मामले में महँगे दिन आ गए हैं, महँगाई बढ़ गई है। इसलिए मेरा केन्द्र की सरकार से यह कहना है कि चाहे वह यात्री किराया है, माल भाड़ा है, पेट्रोल है, डीज़ल है, रसोई गैस है या अन्य और ऐसी चीज़ें हैं, जिनकी कीमतें आप लोग बढ़ाने जा रहे हैं और जो रोजमर्रा की वस्तुएँ की कीमतें बढ़ी हैं, मैं समझती हूँ कि उसकी जड़ में जाकर, उसकी तह में जाकर उसके कारणों को ढूँढना चाहिए और उनका समाधान करना चाहिए। मेरी सरकार से यही रिक्वेस्ट है। धन्यवाद।

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, it is normally considered in very bad taste to spoil a honeymoon. But without any regret and without any apology of being distasteful, I have to, on behalf of the Trinanhool Congress, not only spoil the honeymoon but also make some serious issues early in this new mandate which has been granted by the people of India to this new Government. We want to make some very specific points; first, two points on the rail and then three points on the other hikes. In regard to rail, firstly, this old system which the Congress followed in the UPA is to bypass Parliament and you increase prices. I would first suggest to "the trainee Railway Minister" to read the Vision 2020 Document. It is because if he had read that 81-page document, it would be very clear that passenger fare hike which we will be told that the passenger fares are showing minus ₹ 27,000 crores, we dispute this figure in the first place — is not ₹ 27,000 crores because there are lots of heads under which those passenger fare hikes have been put and which is negative. That figure is somewhere ₹ 5,000 — ₹ 6,000 crores. If they look at it like that, and if they do not put all those extra overheads, the passenger fare hike is a non-starter; it should not be there. And you try and make the same logic you can only get better facilities, if you have passenger fares. By the way, in these passenger fares, one per cent only is for Shatabdis, Durantos and Rajdhanis. The balance, approximately 99 per cent are not for Shatabdis, Durantos and Rajdhanis, they are your second-class passengers who you are giving your so-called bitter pill too. Why do you give them the bitter pill? That is the first point on the railway fares. It should not have been done; it is done at the wrong time; it should have waited for the Budget.

Second, on freight, what is the issue on freight? We made the suggestion before, but they have got 24 hours to do some last minute homework to try and solve the problem

about freight. The freight problem will not be solved, if you keep increasing freight fares. You have to acknowledge that road transportation is your biggest competitor. You have to acknowledge that you cannot take road transportation on. You have to work with road transportation because if you start losing out to road transportation, that will not be your answer. Our concrete suggestion from the Trinamool Congress is, please before the Budget, since you have already messed it up with the freight fares, consider 'RoRo', what we call, 'roll on' and 'roll off'. That is the solution where you' actually load trucks on to the trains and then the road transport and the railways become the partners.

Now I have three quick points on the rest of the price rise. This is another scary thing. Now we are reading about the proposed deregulation of LPG, industrial gas, diesel, petrol, etc. Now we are told that it is on hold. It is again dangerous. After 14th of August when we go on holiday, again this backdoor decision will happen. It is pretty obvious to know that if you do this, what will happen is that agriculture, fertilizer prices for which we have been objecting, will go up. We warned the Government last time, because if fertilizer prices go up as a result, power prices will go up and transport charges will also go up. ...*(Interruptions)*... You are prompting me and I am agreeing with you also. ...*(Interruptions)*... Very good, it is historic. ...*(Interruptions)*... It doesn't matter. ...*(Interruptions)*... Poor man, poor person, common person is the focus ...*(Interruptions)*... Next point is about essential commodities, bringing onion and potato into the essential commodities list. On the face of it, it seems a good idea but our concern is, please look at the Essential Commodities Act very closely because you have not defined 'hoarding'. So, is this a sneaky way in all your talk about cooperative federalism? We are all for 'operative' federalism. Is this a sneaky way to pass the burden on to the States? Beware. So, please define hoarding according to the Essential Commodities Act. Since we have limited time today, the other two points we will make in conclusion are that you have come to power with this multibillion dollar advertising campaign. It is fine. But at the end what we are seeing in this honeymoon period of which we have been the spoilsport—we may not be spoilsport—we will keep pointing out these blunders that you are making. Are you really following your so-called Gujarat model which you followed or actually you are making a photocopy of the Congress model of governance which took this nation nowhere? This is the bottom-line. You are talking about giving a bitter pill. Who are you giving this bitter pill to? Do you want to give the bitter pill to the woman who has to pay more for LPG or the man or the family who has to travel by train? Who is given this bitter pill? Please course correct now. The bitter pill should be given to somebody else. Please spare the 99 per cent of others who don't travel by AC. While on the subject of a pill, let me leave you with the thought that you have got a mandate which you must interpret as a tonic. If you interpret it as a tonic and if you work with everybody, you don't need a bitter pill. Otherwise you will flush that tonic down the drain. Thank you very much.

SHRI S. MUTHUKARUPPAN (Tamil Nadu): Hon. Chairman, Sir, on behalf of AIADMK Party headed by Dr. Puratchi Thalaivi, AIADMK General Secretary and Chief Minister of Tamil Nadu, I want to make this representation. The people of the country have a lot of expectations from the new Government. The new Government is rightly focussing on growth and development. However, with reference to issues concerning the common man like hike in petrol and diesel prices, the prices of essential commodities, etc., my Party supremo, the Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. Puratchi Thalaivi Amma has cautioned the Government not to follow blindly the policy of the UPA Government. So, the steps of new Government should not adversely affect the common man, Sir. Thank you very much.

श्री सभापति: प्रो. राम गोपाल यादव।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): सर, हमारी पार्टी से श्री नरेश अग्रवाल जी बोलेंगे।

श्री नरेश अग्रवाल: सभापति जी, एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर बहस चल रही है।

महोदय, देश की जनता और खासकर नौजवानों को एक ऐसा सपना दिखाया गया था कि यदि सरकार बदल गयी तो बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाएगा। ठीक है, हम लोग आपकी जादूगरी के कायल हैं और यह जादूगरी इसलिए चली क्योंकि जो अब इधर बैठे हैं, इन्होंने भी इतनी ज्यादती कर दी थी कि पब्लिक इन से ऊब गयी थी और मैं तो यह कहता हूं कि इनके साथ रहने वाली सभी पार्टियों को नुकसान उठाना पड़ा। शरद जी बैठे हुए हैं, यह भी रहे, हम भी रहे, हम सब संग रहे, लेकिन आपने जो सपना दिखाया, वह इतनी जल्दी टूटेगा, नहीं सोचा था। हमने तो आपको छह महीने का समय दिया था, हमारे नेता जी ने घोषणा की थी कि हम छह महीने तक सरकार की आलोचना नहीं करेंगे। एक अच्छे पार्लियामेंटेरियन की तरह कहा था कि हम आपको छह महीने का समय देना चाहते हैं ताकि आपने जो वायदे किए हैं, जो देश के सामने तकलीफें हैं, जो देश के सामने समस्याएं हैं, उन समस्याओं का आप कहीं न कहीं समाधान कर सकें, लेकिन हमें नहीं मालूम था कि एक महीने के अंदर ही आप आलोचना के इतने बड़े शिकार हो जाएंगे। जब आप उधर बैठते थे, अरुण जी बैठे हैं, परंपरा यह रही है कि बजट से पहले कभी दाम नहीं बढ़ाए जाते थे। उस सरकार ने जब परंपरा तोड़ी, तो हम लोगों ने आलोचना तब भी की, लेकिन जब आप आए, कल रेल बजट आना है और आपने रेल के किराए पहले ही बढ़ा दिए। आम बजट 10 तारीख को पेश हो रहा है, लेकिन आपने कैरोसिन के, पेट्रोल के, डीजल के दाम बढ़ा दिए। आप निरंतर दाम बढ़ाते चले जा रहे हैं और आप कहते हैं कि कड़वी गोली लेने के लिए तैयार रहें। तो कितनी कड़वी गोली, यह भी तो आप बता दीजिए।

श्री प्रभात झा (मध्य प्रदेश): आप करेक्ट कर लीजिए, कैरोसिन के दाम नहीं बढ़े हैं। **...(व्यवधान)...** गैस के दाम, कैरोसिन के दाम नहीं बढ़े हैं। **...(व्यवधान)...**

श्री नरेश अग्रवाल: माननीय मंत्री जी, **...(व्यवधान)...** एक मिनट। माननीय मंत्री जी, आप आज सदन में घोषणा कीजिए कि केजी-डी-6 बेसिन के दाम, जो आपने चार डॉलर से आठ डॉलर करने का प्रस्ताव बनाया है, जो एक बहुत बड़े पूंजीपति को, जिनसे आपने चुनाव में करीब दस हजार करोड़ रुपये चंदा लिया है, उनको लाभ पहुंचाने के लिए, एक लाख करोड़ रुपए का लाभ पहुंचाने के लिए, **...(व्यवधान)...** धर्मेन्द्र प्रधान जी, पैट्रोलियम मत्री जी बैठे हुए हैं **...(व्यवधान)...**

MR. CHAIRMAN: Silence please. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रभात झा : आप गलत बयानबाजी मत कीजिए। **...(व्यवधान)...**

MR. CHAIRMAN: Nareshji, please continue and finish. ...*(Interruptions)*... आप बैठ जाइए, प्लीज।

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय सभापति जी, जब हम बोल रहे हैं, तो उनको धैर्य से सुनना चाहिए। **...(व्यवधान)...** आप बाद में जवाब दीजिएगा। **...(व्यवधान)...** आप जवाब दीजिएगा। चेयरमैन साहब, **...(व्यवधान)...**

MR. CHAIRMAN: Let him continue please. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : सर, उधर वालों को कहिए कि ये सत्ता पक्ष में आ गए हैं, विपक्ष की आदत को छोड़ दें। सुनने की थोड़ी सी हिम्मत रखें, बात को सुनें। **...(व्यवधान)...**

श्री प्रभात झा : लेकिन* मत बोलिएगा, हमारा इतना निवेदन है।

श्री नरेश अग्रवाल : आपने तो पूरे देशसे *बोला, **...(व्यवधान)...** पूरे देश से * बोला। इनसे बड़ा* कौन हो सकता है? हम कहा पर * हैं? हम तो आपके सामने सत्य रख रहे हैं। श्रीमन्, मैं वित्त मंत्री जी से जानना चाहता हूँ **...(व्यवधान)...**

MR. CHAIRMAN: Nareshji, please continue. ...*(Interruptions)*... Please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : सर, यह * शब्द अनपार्लियामेंटरी है।

MR. CHAIRMAN: No; no. I am aware of it. Whatever is unparliamentary will be expunged. Please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय सभापति जी,ये कहते हैं कि हमने महंगाई पर काबू पा लिया है, हम जल्दी काबू पा लेंगे, राज्य सरकारों को दोषी बनाने लगे, बयान आ गया कि राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है कि काला-बाजारी रोकें। छापे राज्य सरकार डालेंगी, नीति आ पबनाएंगे और दोष राज्य सरकारों को देंगे, यह नहीं चलने वाला। राज्य सरकारें आपके दोष को नहीं मानने जा रहीं। आप नीति संवारिए, नीति को ठीक बनाइए। चुनाव में जिन लोगों ने आपका साथ दिया, जो व्यापारी आपके साथ रहे, क्या आप उन व्यापारियों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे? आप बताइए कि क्या आप सैशन 3/7 समाप्त करने जा रहे हैं या सैक्शन 3/7 को आप अभी कड़ाई से लागू करेंगे? आप इसका जवाब दे दीजिए। आप होर्डिंग की बात करते हैं। आप कौन सी होर्डिंग की बात करते हैं? आपने कर दिया कि हम प्याज और आलू को एसेंशियल कमोडिटीज एक्ट में लाएंगे। प्याज, आलू तो एक गरीब भी बेचता है, समाज का एक सबसे गरीब आदमी बाजार में प्याज और आलू बेचता है, उसको तो आप सैक्शन 3/7 में बंद करने की बात इसी एक्ट में कर रहे हैं और वाकई में गोदामों में होर्डिंग कर रहे हैं, उनके ऊपर कोई कार्रवाई करने की बात नहीं कर रहे हैं। जावड़ेकर जी, आप बताइए कि बजट का फिस्कल डेफिसिट कितना है?

MR. CHAIRMAN: Please address the Chair.

---

*Expunged, as ordered by the Chair.

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय सभापति जी, माननीय मंत्री जी बैठे हैं, हमारे मित्र हैं, क्योंकि हम दोनों ज्यादा बोलते थे, तो हमने सोचा कि इनसे थोड़ा पूछ लें। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि जो बजट का डेफिसिट है, इसे आप कैसे पूरा करेंगे? और अगर, आप पूरा नहीं करेंगे, तो महँगाई को कैसे रोकेंगे? आपने दिखा दिया, हमारा सेंसेक्स हाई जा रहा है। रोज़ मैं पढ़ता हूं सेंसेक्स 15,000 से ऊपर 17,000 से ऊपर, 20 हजार से ऊपर, जितना भी बढ़ा दीजिए, लेकिन आप बताइए कि रुपए का अवमूल्यन क्यों हो रहा है? निरंतर आपका सेंसेक्स बढ़ रहा है, रुपए का अवमूल्यन हो रहा है और डॉलर आप जितना मज़बूत करेंगे, तो महंगाई कैसे घटेगी? आपके धर्मेंद्र प्रधान जी ने एक बयान दे दिया कि इराक के वॉर से इस देश में पेट्रोल की कोई भी समस्या नहीं रहेगी, डीज़ल की भी समस्या नहीं रहेगी। आखिर आप इस सदन को बताएं कि समस्या कैसे नहीं रहेगी? आप कहां से ला हरे हैं? इराक हमारी कंट्री को 50 परसेंट तेल देता था, अगर इराक में प्रॉब्लम हो गई, तो आप तेल कहां से लाएंगे? किस भाव में लाएंगे और देश को किस भाव में देंगे? तो ऐसी समस्या हम सबके सामने है, जिसको आप असत्य बोलकर दूर नहीं कर सकते। अब आप टेलीविज़न पर बहुत दिन आ गए, अब बुरे दिन भी आने वाले हैं। अच्छे दिन आने वाला आपका नारा अच्छा चला, इस देश में बहुत से नारों पर लोग बहके हैं। मुझे याद है, इंदिरा जी भी एक नारा लाई थीं - "मैं कहती हूं गरीब हटाओ, वे कहते हैं, मुझे हटाओ।" एक नारा यह हुआ था और पूरा देश गया था। इंदिरा जी के ऐसेसिनेशन के बाद एक नारा आया था-"इंदिरा जी की अंतिम इच्छा, बूंद-बूंद से देश की रक्षा।" देश भावनाओं में गया था। आपने एक नारा दिया कि "अच्छे दिन आने वाले हैं।"

श्री सभापति: अब आप समाप्त कीजिए।

श्री नरेश अग्रवाल: मैं चाहता हूं कि कम से कम इस सदन को बताया जाए कि वे अच्छे दिन कैसे आएंगे और आप बहाना मत बनाइए। आप राज्य सरकारों के ऊपर न छोड़िए, आप व्यापारियों के ऊपर मत छोड़िए, आप अपनी नीति बनाइए, कड़े निर्णय लीजिए और यह जो आप पीछे से लोगों की मदद कर रहे हैं और बाकी जो आप कर रहे हैं, जो तमाम हो रहा है, जिसे मैं देख रहा हूं, इसको आप बंद कीजिए और सत्यता के आधार पर जनता के सामने आइए और महंगाई रोकिए। नहीं रोकेंगे, तो यही जनता इस सरकार की आलोचना करेगी और बाद में सरकार को नहीं लाएगी।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Shri Sharad Yadav. ...*(Interruptions)*...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : सभापति जी, यह जो समय का ऐलोकेशन हुआ है, वह पार्टीवाइज़ कितना-कितना हुआ है, यह थोड़ा स्पष्ट कर दिया जाए क्योंकि हमारे जो दूसरे स्पीकर्स बोलने वाले हैं...

MR. CHAIRMAN: Let the Party Leaders finish first. Your Leader has already spoken.

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI: Our Leader has spoken but there are other Members too...

MR. CHAIRMAN: We will come to that.

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI: ... and the time allocation has traditionally been allocated in the order of the strength of the Party in the House. So, please clarify that point.

MR. CHAIRMAN: I will come back to you on this. शरद जी, बोलिए।

12.00 Noon

श्री शरद यादव (बिहार)ः सभापति जी, अभी जो बात कहीं गई है, मैं उसको नहीं दोहराऊंगा। यह देश हमेशा टोटैलिटी में, संपूर्णता में देश को देखता ही नहीं। जब भी इस देश में महंगाई की चर्चा होती है और जिन चीजों का नाम गुलाब नबी जी ने लिया, सहमत हूं कि उन चीजों की महंगाई बढ़ी है, लेकिन दूसरी चीजों में जो महंगाई बढ़ती है, यह अजीब देश है कि उनका कभी जिक्र ही नहीं होता। जिन सब्जियों की बात हो रही है, जिन एसेंशियल यानी जरूरी चीजों की, मतलब खानों की चीजों की, तो हिन्दुस्तान की लगभग 75 फीसदी जनता मेहनत करके उन्हें तीन महीने, चार महीने, पांच महीने में या साल भर में पैदा करती है। कौन सब्जी उगाने वाला आदमी है जिसकी हैसियत बढ़ गई? कौन प्याज उगाने वाला है, जिसकी बहुत बड़ी हैसियत बढ़ गई? आलू उगाने वाले की क्या हालत है? शुगरकेन उगाने वाले आदमी की क्या हालत है? यानी सिर्फ बहस का मुद्दा। प्याज लटका कर घूम रहे हैं! अरे भाई, घूमो, लेकिन सवाल है कि जब यह प्याज खेत में था, तब क्या दाम थे? खेत के बाहर आकर जब यह हमारे पास आ जाता है, तब उसके के क्या हाल हैं? यानी जिन बिचौलियों ने देश को 68 वर्ष में तबाह करके रखा है, तो क्या लोहे के दाम? वे कितने बढ़े? सीमेंट के दाम कितने बढ़े? फर्टिलाइज़र्स के दाम कितने बढ़े? पेस्टिसाइड्ज़ के दाम कितने बढ़े? कपड़ों के दाम कितने बढ़े? जितने भी इलेक्ट्रॉनिक इंस्ट्रूमेंट्स हैं, उनके दाम कितने बढ़े? यह कभी बहस का मुद्दा ही नहीं होता और यह किसान नहीं करता, यदि किसान करता तो हिन्दुस्तान की गरीबी का यह हाल नहीं होता। रंगराजन समिति, कितनी तरह की कमेटियां बनती हैं, लेकिन इस देश में जो सबसे ज्यादा गरीब लोग हैं, उनकी चर्चा और उनकी आवाज कोई सुनने वाला नहीं है और सुनोगे भी नहीं। सभापति महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस देश की इज्जत मांग हिन्दुस्तान की जनता की मजबूती पर है। जो पसीना बहाता है, जो दिन भर पानी में, दिंन भर जगल में, दिन भर पहाड़ पर जान लगाता है वह जब तक मजबूत नहीं होगा, तब तक यह देश कभी मजबूत नहीं हो सकता। ये दाम जो बढ़े हैं, किसने बढ़ाए हैं? ये बिचौलिए जो हैं वे समाज चला रहे हैं और चुनावों में जो हालत है, हमारे जैसे आदमी आगे आने वाला हैं। ऐसा सम्पत्ति का खेल हो रहा है और चुनाव आयोग, मैं इस पर ज्यादा नहीं जाऊंगा, वह एक संस्था है। लेकिन आज मैं आपसे कहूं कि सिर्फ इसकी चर्चा है, महंगाई सिर्फ इसमें बढ़ी है- सब्जी में, खाने की चीजों में, दालों में, चावल में, गेहूं में और किसी चीज में नहीं बढ़ी महंगाई? महंगाई हर चीज पर बढ़ी है। इस सदन में जो बैठे हैं, जितना सामान है, सब की महंगाई बढ़ी है। जिन वस्त्रों को पहने हुए हैं, सब की महंगाई आसमान पर चली गई। आंखों पर चश्मा लगाए इनके दाम देखों, क्या बढ़ गए। ऐसी कौन सी चीज है, चाहे वह सीमेंट हो, चाहे वह लोहा हो, क्या वह एसेंशियसल नहीं है? जिंदगी भर के लिए मकान बनाना है, तो वह कैसे बनेगा? ऐसा कौन सा सब्जी वाला है जिसके पास गाड़ी आ गई? मोटर साइकिल भी आ गई तो बताएं? किसान की जो होल्डिंग है वह उतनी छोटी हो गई है, दो बीघा, चार बीघा, पांच बीघा खेत कम हो रहे हैं। आबादी बढ़ रही है। विषमता बढ़ रही है। जब भी सब्जियों के दाम बढ़ेंगे, जब भी एसेंशियल चीजों के दाम बढ़ेंगे और हम लोग सिर्फ यह कह देते हैं कि कि इस देश के जो लोग हैं वे सस्ती सब्जी खाना चाहते हैं, सस्ता आलू खाना चाहते हैं। अरे भाई, खाना चाहते हो ठीक है, लेकिन किसान तो सस्ते में ही दे रहा है, किसान तो बिल्कुल सस्ते में ही दे रहा है। कौन है यह बिचौलिया? यह बिचौलिया देश भर में हर तरह के समाज में है। यह जो गरीबों के लिए आपने कार्यक्रम रखा है, आप अंदाज नहीं करोगे कि मनरेगा में दो दिन के दस्तखत कराकर ये बिचौलिए पूरी तनख्वाह उठा लेते हैं। ऐसे बिचौलिए एक भी चीज गरीबों के हक में नहीं जाने देते। अफीम नहीं गिरी है, भांग नहीं गिरी है। इस देश में अफीम चल गई है, अफीम गिर गई है, यानी हर आदमी किसी तरह से अपना घर,

मन चंगा तो कठौती से गंगा, यानी घर चंगा तो कठौती में गंगा। हर घर भारत हो गया है। कैसे इस समाज का जो खंड-खंड है, कैसे इस समाज का जो विखंडन है, कैसे लाखों जात बनाकर रखे हो, लाखों जातों से विषमता है। कोई भी बात में सच्ची बहस नहीं करते हो। आज आबादी का क्या हाल है? इस देश में 32 करोड़, 33 करोड़ से ज्यादा नहीं चाहिए। आप 120 करोड़ हो गए। आपने जानवर मार दिए, पक्षी मार दिए, जो चील है सबसे काम की, उसको मार दिया और आज की जो बहस है वह आपके लिमिटेड कर दी। महंगाई तो टोटेलिटी में है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो महंगाई है, वह हर चीज में गरीब को छू रही है। हर चीज गरीब को मार रही है। यह जो आपने महीने-डेढ़ महीने में किया है, आप कहते हो कि यह जरूरी है। मान लो जरूरी है तो क्यों चुनाव में बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो? आप कह रहे हैं कि बेकारी मिटा देंगे। किससे मिटाएंगे आप? यानी आप कॉरिडोर बनाएंगे। हिन्दुस्तान में जान लो, प्रधान मंत्री जी, आप बैठे हैं, हिन्दुस्तान में भी कोई एक चीज है तो हिन्दुस्तान की खेती और किसानी है। हिन्दुस्तान की कोई एक चीज है जिसमें ताकत हो सकती है और दुनिया का जरखेज इलाका भी कोई है तो हिन्दुस्तान में है। जरखेज इलाके की इतनी जमीन चली गई है, 17 परसेंट जो जमीन है वह चली गई उनके हाथ में जो पूंजी इकट्ठा करते हैं। बैंक का बुरा हाल है। कभी इसी सदन में मैं आपको बताऊंगा कि जो पूंजीपति हैं, उन लोगों ने कितने बैंक से कैसा पैसा उठाया हुआ है। वे सारे के सारे जो कॉरपोरेट लोग हैं, जिनकी आप आरती उतारना चाहते हैं और वे किसी भी पक्ष के लिए - मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आपका पक्ष है या इनका पक्ष है, सबका यह काम है। यह बहुत अजीब बात है कि मुल्क में पैर मजबूत नहीं हों और आप कहते हैं कि ऊपर मजबूत हो जाएगा। आप देश को लंगड़ा-लूला बनाता चाहते हैं? मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैं यह मानता हूं कि महंगाई बढ़ी है और आपसे ठीक कहा कि यह बिचौलियों ने बढ़ाई है, जमाखोरों ने बढ़ाई है। जमाखोर आज से नहीं, बंगाल के फेमीन से हैं। एक बहुत बड़ा आदमी है, मैं उनका नाम नहीं लूंगा, वह पूंजीपति उसी से बना, इस देश का सबसे बड़ा इंसान वही बना। जब भी देश में कोई संकट आता है तो उससे मुट्ठी भर लोग लाभ उठाते हैं। यह बाजार जरूर आएगा। लेकिन बाजार का मतलब धरती में जो ताकत है, जो हमारी ताकत है, वह खेती है, हमारी ताकत है, हिन्दुस्तान की जरखेत जमीन। हिन्दुस्तान की ताकत, जो पसीना बहाकर दौलत बनाता है, वह है। लेकिन वह तो रोज गरीब हो जाता है, रोज तबाह हो जाता है। हमारी हर तरह की नीति उसको तबाही के गटर में डाल देती है। ऐसा देश हमने बना लिया है। यानी ऐसा विकलांग देश, जिसमें हम एक तरफा बहस करते हैं, एकतरफा बात करते हैं। यहां पर खेती में पैदा होने वाली चीजों के बारे में अकेले क्यों चर्चा करते हैं? अगर चर्चा करते हैं तो बिचौलियों की चर्चा करो। खेत में उसको कितना मिलता है, कितना मिलता है आलू पर, कितना मिलता है प्याज पर, कितना मिलता है टमाटर पर, कितना सब्जी में पैदा करके देता है, जरा जाकर देख लो।

श्री सभापति: शरद जी, अब समाप्त कीजिए।

श्री शरद यादव: इसलिए मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि दूसरी चीजों के बारे में भी यहां जरूर चर्चा होनी चाहिए। इस पर आप समय की रोक लगा रहे हैं, बड़ी गजब बात है!

श्री सभापति: और लोग भी बोलने वाले हैं।

श्री शरद यादव: और बोलने वाले हैं तो दो दिन तक इसको चलाइए। दो दिन चलाइए, तीन दिन चलाइए, फालतू बहस से क्या फायदा? यह असली बहस आयी है और मैं इस पर विस्तार से आंकड़ों सहित बोलना चाहता था लेकिन जहांपनाह, आपने टाइम लिमिट कर दी तो आफत हो गयी। मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि आपके पास तो मैं आता हूं और जाता हूं। उधर चला जाता हूं, फिर आपके

पास वापस आ जाता हूं। लौट के बुद्धू घर को आए। इसलिए मेरी आपसे विनती है कि मुझे न सही, लेकिन इस बहस को जमने दीजिए। यह बहुत जरूरी है। यहां जिस तरह से बहस शुरू हुई है, उसमें मैं कहना चाहता हूं कि इन्होंने पिछले डेढ़ महीने में दाम बढ़ाए हैं। अब इन्होंने दाम बढ़ाए हैं तो उसका तर्क ये देंगे। लेकिन मेरा आपसे कहना है कि दाम बढ़ाकरण, जैसा यह कह रहे हैं कि कड़वी दवा देंगे, यह कड़वी दवा हिन्दुस्तान के जो मेहनकश हैं, उनके पेट में ही जाएगी। इन्हीं शब्दों के साथ, मेरी विनती है कि बहस को संपूर्ण होना चाहिए, बहस के लिए संपूर्ण दृष्टि होनी चाहिए, तभी ठीक लक्ष्य बनेगा। यही निवेदन करके मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

INTRODUCTION OF MINISTER BY PRIME MINISTER

MR. CHAIRMAN : Introduction of Minister's the hon. Prime Minister.

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): माननीय सभापति जी, मैं आपकी अनुमति से आपसे, और आपके माध्यम से इस सम्मानित सदन से श्री राधाकृष्णन पी., भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री का परिचय कराना चाहता हूं। इनका परिचय दिनांक 10.06.2014 को नहीं हो सका था।

MR. CHAIRMAN: Before we proceed with the discussion, we shall take up Papers to be Laid on the Table.

SHRI SITARAM YECHURY (West Bengal): Sir, what is this? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Just one minute. It is a routine thing. It will take half a minute.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, how can you stop the discussion?

MR. CHAIRMAN: No, no. It will take half a minute, Sitaramji. Shrimati Smriti Zubin Irani.

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश): सर इस विषय को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। **...(व्यवधान)...** महंगाई को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है।

MR. CHAIRMAN: Please. We will continue.

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

Ganga Rejuvenation Plan in Uttarakhand

*1. SHRI TARUN VIJAY: Will the Minister of WATER RESOURCES, RIVER DEVELOPMENT AND GANGA REJUVENATION be pleased to state:

(a) the details of Ganga Rejuvenation Plan in Uttarakhand and whether it involves stopping some current Hydro Electric Projects which are considered hazardous for Ganga's flow in Uttarakhand; and